विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 26 : अंक 29 : नई दिल्ली : 9-15 अक्टूबर 2020

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण आदि चारित्रात्माएं हैदराबाद में स्थित 'महाश्रमण वाटिका' में सुखसातापूर्वक विराजमान हैं। केन्द्रीय संस्थाओं के अधिवेशन प्रायः वर्चुअल रूप में ही समायोजित हो रहे हैं। गत दिनों अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ किशोर मंडल, जैन विश्व भारती और अमृतवाणी का अधिवेशन समायोजित हुआ। आचार्यप्रवर के शासनकाल में हर चतुर्मास में गुरुकुलवासी चारित्रात्माओं के मासखमण तप होते आ रहे हैं। इस वर्ष भी यह क्रम यथावत बरकरार रहा। एक साध्वीजी मासखमण सम्पन्नता की दिशा में गतिमान हैं।

स्मृतियां लॉकडाउन की

छोटे से कक्ष में आयोजित अक्षय तृतीया समारोह से लाभान्वित हुए हजारों श्रद्धालु

२६ अप्रेल। वैशाख शुक्ला तृतीया। अक्षय तृतीया का पावन दिन। हजारों तपस्वियों के वर्षीतप के पारणा का प्रसंग। निर्धारित कार्यक्रमानुसार यह आयोजन परमपूज्य आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में औरंगाबाद में होना था और उस अवसर पर सैकड़ों वर्षीतप पारणार्थियों के पहुंचने की सूचना भी प्राप्त हो चुकी थी, किन्तु परिस्थितियां बदलीं तो पूज्यप्रवर ने द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव की अनुकूलतानुसार की गई अपनी घोषणा में भी बदलाव किया। आज परमपूज्य आचार्यप्रवर महाराष्ट्र के सोलापुर के निकट ब्रह्मदेव माने इंस्टिट्यूट बेलाटी में विराजमान थे।

परमपूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'वैशाख शुक्ला तृतीया को अक्षय तृतीया की संज्ञा प्राप्त है। यह एक महत्त्वपूर्ण दिवस है। आज का दिन एक सहज मुहूर्त के रूप में भी जाना जाता है। वैशाख मास में कुछ गर्मी का अनुभव हो सकता है। गर्मी ताप है और आज का दिन तप से भी जुड़ा है। ताप में तप करना और भी विशेष बात हो सकती है। आज का दिन भगवान ऋषभ की सहज हुई तपस्या के साथ जुड़ा हुआ है। एक अपेक्षा से कहें तो आज का दिन तप के पारणे का दिन है।

भगवान ऋषभ ने आज के दिन इक्षुरस के पान के द्वारा अपनी सहज तपस्या की संपन्नता की थी। मानों पारणा किया था। चैत्र कृष्णा अष्टमी को दीक्षित हुए प्रभु ऋषभ को आहार की अपेक्षा थी, किन्तु लोगों को इतना ज्ञान नहीं था कि इन्हें आहार चाहिए। इसलिए किसी ने हाथी, किसी ने घोड़ा, किसी ने रथ के लिए आग्रह किया। प्रभु को नंगे पैर देखकर किसी ने रत्न-जड़ित जूते लाकर पहन लेने का आग्रह किया। किसी ने नंगे सिर देखकर मुकुट धारण करने का आग्रह किया। ऋषभ के शरीर पर आभूषण न देखकर नाना प्रकार के आभूषणों के लिए आग्रह किया, किन्तु खाद्य-पदार्थों के लिए किसी ने नहीं कहा। शुद्ध आहार के अभाव में ऋषभ को बिना खाये-पीये बारह मास बीत गए। भिक्षा के अभाव में वे भिक्षा की गवेषणा करते, शेष समय में ध्यानस्थ बने रहते। आखिर श्रेयांस को बोध मिला, उसने प्रभु को इक्षुरस का दान दिया, तब प्रभु ने पारणा किया। प्रभु के पारणे की पृष्ठभूमि में तपस्या है।

भगवान ऋषभ वर्तमान अवसर्पिणी के इस जम्बूद्वीप में इस भरत क्षेत्र में प्रथम तीर्थंकर हुए। यह दुनिया का मानों सौभाग्य है कि दुनिया में उच्चतम कोटि के महापुरुष भी पैदा होते हैं। विशिष्ट महापुरुष दुनिया के मानों शृंगार होते हैं। भगवान ऋषभ ने गार्हस्थ्य में मानों अपने ढंग से कार्य किया। वे राजा के रूप में भी रहे। लोगों को सांसारिक कार्यों का ज्ञान, प्रतिबोध देने वाले भी रहे। आखिर उन्होंने सांसारिक कार्यों को छोड़ा, मुनित्व को स्वीकार कर लिया। मुनित्व स्वीकरण के साधिक एक वर्ष बीत जाने के बाद आज के दिन

उनका पारणा हुआ। भगवान महावीर ने जो तपस्या की या हो गई, वह तो वर्तमान में हो पानी मुश्किल है। साधिक एक वर्ष तक निराहार रह पाना अभी मुश्किल है। आदमी आदर्श की उत्कृष्ट स्थिति को न पा सके तो यथासंभव यथानुकूलता कुछ प्रतिशत तो पाने का प्रयास किया ही जा सकता है।

कई चारित्रात्माओं, समणश्रेणी सदस्यों और गृहस्थों ने भगवान ऋषभ के उस तप का अनुसरण करते हुए एक दिन खाना और एक दिन न खाना-इस रूप में वर्षीतप किया है। यह भी अपने आप में अच्छा उपक्रम है। यह तप भी एक अनुमोदनीय कार्य है। कितने-कितने लोग आज के दिन अपने वर्षीतप को सम्पन्न करते हैं।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार अभी मुझे औरंगाबाद में स्थित होना था और वहां अक्षय तृतीया का कार्यक्रम आयोजित होना था, किन्तु द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार परिवर्तन किया गया। औरंगाबाद में तो मैं नहीं जा सका, किन्तु आज भी महाराष्ट्र में स्थित हूं। महाराष्ट्र के सोलापुर के निकट ब्रह्मदेव माने इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी में बैठा हूं। वर्षीतप करने वाले कितने लोगों ने अपना कार्यक्रम बनाया होगा कि हम औरंगाबाद में अक्षय तृतीया के दिन महाश्रमणजी की सन्निधि में पारणा करेंगे।

वर्षीतप करने वाले लोग प्रत्यक्ष रूप में हमारे आसपास विशेष न भी हों, वे जहां भी हों, यदि मेरी आवाज उन तक पहुंच रही हो तो मैं उन्हें पारणे के संदर्भ में मंगलपाठ सुनाना चाहता हूं। तपस्वी लोगों के पास मेरी आवाज जा रही हो तो वे यथासंभव खड़े-खड़े मंगलपाठ सुन सकते हैं। (पूज्यप्रवर ने बृहत मंगलपाठ उच्चरित किया, जिसे सुनकर तपस्वियों ने धन्यता की अनुभूति की।) जिन गृहस्थों ने वर्षीतप किया है, उन्हें वर्षीतप में कहीं कोई दोष लगा हो तो उन्हें ५१-५१ अतिरिक्त सामायिक की आलोयणा दी जा रही है।

पूज्यप्रवर ने श्रावक संदेशिका की धारा ४८४ के अन्तर्गत दिए गए वर्षीतप काल में पालनीय नियमों की अवगति प्रदान की। आचार्यप्रवर ने अक्षय तृतीया के संदर्भ में 'आयो आदीश्वर रे वर्षीतप रो पारणो जी' गीत का संगान भी किया।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'आज एक और प्रसंग है-श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री सुमेरमलजी लाडनूं की आज प्रथम वार्षिकी पुण्यतिथि है। आज से एक वर्ष पूर्व श्रद्धेय मंत्रीमुनिश्री जयपुर में महाप्रयाण कर गए थे। वे परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के पास एक बालक के रूप में दीक्षित हुए थे। उन्हें विकास का अच्छा अवसर मिला। वे गुरुदेव तुलसी की छत्रछाया में रहे। शासन स्तंभ मुनिश्री घासीरामजी स्वामी के सान्निध्य में रहने का भी उन्हें अवसर मिला। वे आगे बढ़े। फिर अग्रणी बने। धर्मसंघ में अच्छा कार्य किया, सेवा की। मेरे जैसे बालकों को उन्होंने मुनि दीक्षा प्रदान की। वे बहुश्रुत परिषद के संयोजक बनाए गए थे। मंत्रीमुनि के स्थान को वे सुशोभित कर रहे थे। वे अच्छे प्रवचनकार थे, तत्वज्ञ भी थे, तेरापंथ इतिहास और तेरापंथ दर्शन के अच्छे ज्ञाता, विशेषज्ञ संत थे।

आज से एक वर्ष पूर्व मुनिश्री पधार गए थे। मैं उनके प्रति अपनी भावांजलि अर्पित करता हूं। उन्होंने अपनी साधना के साथ संघ की सेवा की। मुझे भी मानों तारने में वे सहयोगी बने। उन्होंने मुझे दीक्षा ही नहीं दी, मेरे वैराग्यभाव को निष्ठा तक ले जाने में भी मुनिश्री का योगदान रहा। मुझे अनेक चतुर्मास मुनिश्री के सान्निध्य में करने का मौका मिला। मुनिश्री उदितकुमारजी और मैं--हम दोनों श्रद्धेय मुनिश्री के द्वारा दीक्षित हुए। बाद में दो और मुनि (मुनि अनन्तकुमारजी और मुनि ज्योतिर्मय) भी उनके द्वारा दीक्षित हुए। मैं मुनिश्री के प्रति अपनी मंगलभावना अर्पित करता हूं और सम्मान भाव के साथ उनकी स्मृति भी करता हूं।

पूज्यप्रवर ने अक्षय तृतीया के संदर्भ में अपने प्रवचन के उपरांत करीब आधा घंटा तक 'ऊँ ऋषभाय नमः' का जप किया। आचार्यप्रवर के प्रवचन तथा प्रवचन के दौरान सुनाए गए मंगलपाठ का संप्रसारण यूट्यूब के अमृतवाणी के तेरापंथ चैनल पर किया गया, जिसे हजारों लोगों ने सुना। सैंकडों लोग जप अनुष्ठान

में संभागी रहे। आधुनिक दौर में सोश्यल मीडिया के माध्यम से श्रद्धालुजन प्रतिदिन पूज्य प्रवर के प्रवचन से लाभान्वित हो रहे हैं।

सोलापुर के पांच श्रद्धालु अपने वर्षीतप का पारणा करने के उद्देश्य से पूज्यप्रवर के प्रवास परिसर में पहुंचे। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने तो उनके हाथों से गोचरी नहीं की, किन्तु उन्होंने अन्य चारित्रात्माओं को इक्षुरस बहराकर पारणा किया।

आज मंत्रीमुनिश्री की प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि के संदर्भ में आचार्यप्रवर ने पौरुषी की।

परमपूज्य आचार्यप्रवर का ५९वां जन्मदिवस : हृदय में उमड़ता रहा भावों का ज्वार

२ मई। वैशाख शुक्ला नवमी। परमपूज्य आचार्यप्रवर का ५९वां जन्मदिवस। भावों के उमड़ते प्रवाह को मानों आज बांध बनाकर अवरुद्ध कर दिया गया था। चतुर्विध धर्मसंघ अपने आराध्य को वर्धापित करना चाहता था, साधु-साध्वियां आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी-अपनी प्रस्तुति देना चाहते थे, हजारों श्रावक-श्राविकाएं इस अवसर पर पूज्यचरणों में उपस्थित होकर अपने भावों का अर्घ्य अर्पित करना चाहते थे, किन्तु इन सभी भावनाओं से बलवती थी परम पूज्य आचार्यप्रवर की करुणार्द्र विश्व शांति की भावना और संकटग्रस्त लोगों के चित्त समाधि, शांति की कामना। आचार्यप्रवर ने इस वर्ष के अपने जन्म दिवस, पदारोहण दिवस और दीक्षा दिवस-इन तीनों महत्त्वपूर्ण प्रसंगों को इसीके लिए समर्पित कर अन्य वर्धापना स्वरूप किए जाने वाले उपक्रमों का निषेध कर दिया था। करुणा से ओतप्रोत आचार्यप्रवर के इस निर्देश का अक्षरशः पालन करना चतुर्विध धर्मसंघ का पुनीत धर्म था, यही कारण रहा हर वर्ष इन अवसरों पर मुखर रहने वाले मुख आज मौन व्रत धारण किए हुए थे, किन्तु हृदय में उमड़ता श्रद्धाभावों का ज्वार यथावत बरकरार था।

प्रातः चार बजे परम पूज्य आचार्यप्रवर के विराजमान होने से पूर्व ही कई मुनिवृन्द पूज्यसन्निधि में उपस्थित हो गए। सम्मुखीन मैदान में कई गृहस्थ भी उपस्थित थे। पूज्यप्रवर के विराजमान होते ही 'वंदे गुरुवरम्' का श्रद्धासिक्त स्वर गुंजायमान हुआ। गृहस्थों की ओर से थाली वादन की क्षणिक रस्म अदा की गई और पूज्यचरणों में मंगलकामनाएं अर्पित की गईं। आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगलपाठ सुनाया। संत क्रमशः पूज्यसन्निधि में पहुंचकर अपनी-अपनी मंगलकामना व्यक्तिगत रूप में श्रीचरणों में अर्पित कर रहे थे। आचार्यप्रवर मंद मुस्कान के साथ आशीर्वाद की मुद्रा में उनकी भावनाएं स्वीकार कर रहे थे। आचार्यप्रवर को कुछ संतों की भावभंगिमा को देखकर यह ज्ञात हुआ कि वे संत वर्धापना में गीत प्रस्तुति हेतु समुत्सुक हैं। आचार्यप्रवर ने उन्हें सवात्सल्य संकेत के साथ निषेध कर दिया।

सूर्योदय के पश्चात् महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां परमाराध्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुईं। साध्वियों ने पूज्यप्रवर को सविधि वन्दना की। साध्वीप्रमुखाजी ने आचार्यप्रवर को निवेदन किया--'आज परमाराध्य आचार्यप्रवर का जन्मदिवस है। यह व्यक्ति नहीं, एक संस्कृति का जन्मदिवस है। परमपूज्य आचार्यप्रवर से सम्पूर्ण धर्मसंघ, जैन धर्म और मानव जाति को आलोक मिलता रहे। आज के दिन जो सूर्य उदित हुआ था, उसका तेज उतरोत्तर सबको प्रकाशित करता रहे।'

आज साध्वीवर्याजी ने पूज्यप्रवर के जन्मोत्सव के संदर्भ में स्वरचित गीत लिखित रूप में आचार्यप्रवर के समक्ष प्रस्तुत किया। पूज्यप्रवर ने उसमें अर्पित श्रद्धाभावों को स्वीकार किया। वह गीत इस प्रकार है-

महातपस्वी महायशस्वी महाश्रमण भगवान।
शक्ति के धाम तुम ही, भक्ति आस्थान तुम ही।।

जीवन धन मेरे जीवनदाता उपकारी हो।
शांतसुधामय मूरत वीर प्रभु के अवतारी हो।
हे गुणसागर! नवनिधि आकर ज्योतिचरण मतिमान।।१।।

उपशम मोहक मुद्रा नयनों में बहती करुणाधार है।
संत वही है जिसकी आभा में मैत्री का विस्तार है।
सन्निधि सुखकर, हृदय विकस्वर हो जगती के त्राण।।२।।

धृतिगुण करता मानों अहोनिशि तन्मय होकर चाकरी।
सत्य उपासना में त्रिहुं जोग देते पक्की हाजारी।
अविचल रहते, सब कुछ सहते संकल्प बने फलवान।।
विनय समर्पण में नम्बर वन महाप्रज्ञ फरमान।।३।।

स्थावर जंगम सारे प्राणियों के नाथ अभय प्रदाता हैं।
देख सजगता गहरी होती प्रसन्न ईर्या माता है।
पालनहारी तारणहारी जन-जन गाएं गान।।४।।

पावन चरणों की करती रहूं नित आराधना।
पल-पल सिंचन पाकर फलती रहे संयम साधना।
हे पथदर्शक! हे संरक्षक! दो सिद्धि वरदान।।५।।

लय : भिक्षु स्वामी अंतर्यामी कर दो बेड़ा पार ...

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आध्यात्मिक संपोषण-५ में प्रदत्त अपने निर्देश के अनुरूप अपने प्रवचन के मध्य करीब १०.१० बजे से जप प्रयोग किया। इससे पूर्व आचार्यप्रवर पट्ट से नीचे खड़े हुए और कहा--'आज हमें जप का प्रयोग भी करना है। 'चइता भारहं वासं.....' श्लोक का हमें खड़े-खड़े सात बार पाठ करना है। जिनके लिए संभव हो सके वे खड़े-खड़े पाठ कर सकते हैं। इस पाठ से कर्म निर्जरा तो वांछनीय है ही, उसके साथ वर्तमान में जो कोरोना वायरस की स्थिति बनी हुई है, कितने-कितने लोग इसके संदर्भ में संकटग्रस्त भी हुए हैं। कितने लोग कालकवलित हो गए, जो गए उनके पीछे वाले लोगों के मन में तकलीफ हो सकती है, भय के कारण भी कठिनाई हो सकती हैं। विश्व शांति और विशेषतया वर्तमान स्थिति में संकटग्रस्त लोगों की चित्त समाधि - शांति की मंगलकामना के रूप में इस श्लोक का पाठ किया जा रहा है। शांतिनाथ भगवान के संदर्भ में यह जो श्लोक है, बहुत सुन्दर है, आगम की वाणी है। इसका सात बार पाठ किया जा रहा है। (पूज्यप्रवर ने खड़े-खड़े 'चइत्ता भारहं वासं .....' श्लोक का सात बार पाठ किया।) हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना है कि पूरे विश्व में चित्तसमाधि फैले, शांति फैले, मन में आर्तध्यान न रहे। जो संकटग्रस्त लोग हैं, उनमें समता-शांति का भाव रहे, अभय का भाव रहे। हमारी बार-बार मंगलकामना है कि विश्व में शांति रहे।'

अमृतवाणी द्वारा सोश्यल मीडिया पर प्रसारित इस जप अनुष्ठान से हजारों श्रद्धालुजन जुड़े।

गत कल भारत के गृह मंत्रालय द्वारा लोकडाउन की अवधि को १७ मई तक बढाने की घोषणा कर दी गई। उसी के मद्देनजर आज मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के उपरान्त परमाराध्य आचार्यप्रवर की मंगलसन्निधि में बहुश्रुत परिषद के गुरुकुलवासस्थ चारों सदस्यों तथा कुछ संतों की संगोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी में आचार्यप्रवर ने विचार विमर्श करने के उपरान्त जो निर्णय किया, वह इस प्रकार है--

अर्हम् २ मई २०२०

स्थान की उपलब्धता के अनुसार अहिंसा यात्रा को यथासंभव ३१ मई २०२० तक बीएमआईटी, बेलाटी, सोलापुर में विराजमान रखने का निर्णय किया जा रहा है।

बी.एम.आई.टी. बेलाटी **आचार्य महाश्रमण**
सोलापुर, महाराष्ट्र

इससे पूर्व यह प्रवास यहां करीब ३ मई तक के लिए निर्धारित था। आचार्यप्रवर द्वारा आज निर्धारित प्रवास की अवधि अर्थात ३१ मई तक का प्रवास नवीन घोषित लोकडाउन की अवधि (१७ मई) से चौदह दिन ज्यादा है। इतने दिन ज्यादा रखने की पृष्ठभूमि में दूरदर्शी आचार्यप्रवर का क्या चिन्तन है, यह तो समय के साथ ही स्पष्ट हो सकेगा।

आज आचार्यप्रवर ने जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के लिए आध्यात्मिक संपोषण-६ के रूप में संदेश प्रदान किया गया, जिसे सोश्यल मीडिया के माध्यम से संप्रसारित किया गया। आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त आध्यात्मिक संपोषण-६ इस प्रकार है-

आध्यात्मिक संपोषण-६

संदर्भ : कोरोना वायरस

१. सभी चारित्रात्माएं, समणश्रेणी सदस्य, संघीय संस्था सदस्य और अन्य श्रावक-श्राविकाएं समता और अभय का भाव रखने का प्रयास रखें, सोश्यल डिस्टेंसिंग आदि के रूप में समुचित सावधानी भी रखें।
२. वर्तमान समस्या के संदर्भ में सरकार और प्रशासन के द्वारा निर्दिष्ट व्यवस्था के प्रति भी हमें समुचित सजगता रखनी चाहिए।
३. 'चइत्ता भारहं वासं' श्लोक का प्रतिदिन कम से कम २१ बार रात्रि १२ बजे से दिन के १२ बजे के बीच यथानुकूलता जप किया जा सकता है। नमस्कारसहिता, पौरुषी आदि कोई तप भी उसके साथ जोड़ा जा सकता है। यह क्रम ३१ मई २०२० तक यथासंभव चलाया जाना चाहिए।
४. हमने स्थान की उपलब्धता के अनुसार अहिंसा यात्रा को यथासंभव ३१ मई २०२० तक बी.एम.आई.टी., बेलाटी (सोलापुर, महाराष्ट्र) में विराजमान रखने का निर्णय किया है।
५. चारित्रात्माएं व समणश्रेणी सदस्य जो जिस क्षेत्र में अभी प्रवासित हैं, विशेष निर्देश के सिवाय १७ मई २०२० तक यथासंभव वे वहीं प्रवास करें।
६. गोचरी के संदर्भ में आध्यात्मिक संपोषण-३ में धारा ४ से ७ में जो सुविधाएं दी गई हैं, आवश्यकतानुसार उनका उपयोग करना फिलहाल अनापत्तिपूर्ण है।
७. चारित्रात्माओं और समणश्रेणी सदस्यों को किसी भी प्रकार की कठिनाई हो तो आवश्यकतानुसार गुरुकुलवास में वे अपना निवेदन पहुंचा सकते हैं।
८. वर्तमान में संभवतः आंशिक रूप में एकान्तवास हो रहा है चारित्रात्माओं के भी, समणश्रेणी के भी और श्रावक-श्राविकाओं के भी, इसलिए हमें प्रकृति से मिले इस अवसर का आध्यात्मिक लाभ उठाने का प्रयास करना चाहिए, स्वाध्याय, ध्यान, जप आदि में यथानुकूलता समय का खूब नियोजन करना चाहिए।
९. १७ मई २०२० तक साधु-साध्वियां व समणश्रेणी सदस्य गोचरी आदि प्रायोजन से अपने प्रवास स्थल परिसर से बाहर हों, तब यथासंभव मास्क अथवा कपड़ा अपने मुख व नासिका पर यथानुकूलता लगाए रखें।
१०. ३१ मई २०२० तक किसी भी प्रकार का व्याख्यान, संगोष्ठी, सम्मेलन आदि कार्यक्रम समायोजित नहीं किया जाए।
११. ३१ मई २०२० तक यथासंभव गृहस्थ चारित्रात्माओं के चरणस्पर्श न करें।
१२. यह संदेश तेरापंथी सभाओं के पास पहुंच जाए तो वे अपने क्षेत्र में व अपने क्षेत्र के आसपास प्रवासित चारित्रात्माओं व समणश्रेणी सदस्यों को इससे अवगत करा सकती हैं।

बी.एम.आई.टी. बेलाटी
सोलापुर, महाराष्ट्र

आचार्य महाश्रमण

एकादशमाधिशास्ता का एकादशम आचार्य पदारोहण दिवस

३ मई। वैशाख शुक्ला दसमी। तेरापंथ धर्मसंघ के ग्यारहवें अनुशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण का ग्यारहवां आचार्य पदारोहण दिवस। पश्चिम रात्रि में चार बजे के कुछ देर बाद से ही संत पूज्यसन्निधि में उपस्थित होकर व्यक्तिगत रूप में श्रीचरणों में अपने आस्थासिक्त भाव अर्पित करने लग गए।

सूर्योदय के उपरान्त साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि में उपस्थित हुईं। सविधि वन्दना का उपक्रम सम्पन्न होने के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर की बरगद-सी विशाल और पवित्र छत्रछाया में विशाल धर्मसंघ साधना में आगे बढता रहे, प्रगति करता रहे।' साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर को नई प्रमार्जनी अर्पित की, जिसे पूज्यप्रवर ने अपने कन्धे पर रखा तो उपस्थित साधु-साध्वीवृन्द ने पूज्यप्रवर को वन्दन किया।

साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर की वर्धापना में आचार्य पदारोहण के उपलक्ष में स्वरचित कविता लिखित रूप में आचार्यप्रवर के समुख प्रस्तुत कीं। आचार्यप्रवर ने उसे पढकर उसमें मुखरित मंगलभावों को स्वीकार किया। साध्वीप्रमुखाजी द्वारा रचित वह कविता इस प्रकार है-

भोर दशमी की खड़ी यह ले नया उपहार।
विजय पग-पग पर वरो तुम भिक्षु-गण शृंगार।।

जिन्दगी के पल तुम्हारे हो सदा कृतकाम,
खोलते ही रहो गण में नित नए आयाम,
दीर्घकालिक विजय यात्रा रच रही इतिहास,
हो प्रतिष्ठा अहिंसा की कर रहे आयास,
शांति के संदेशवाहक शांति के अवतार।।

मचा कोरोना-जनित सब ओर हाहाकार,
दो नई संजीवनी हो विश्व का उद्धार,
बढ़ रही है महामारी मनुज है भयभीत,
अभय का ब्रह्मास्त्र दे दो हो अकल्पित जीत,
विघ्न-बाधाएं सभी जाएं समुद्रों पार।।

बढ़े अनुशासन सभी में दूर हो संत्रास,
स्वस्थ चिंतन स्वच्छ वर्तन जगे उजली आश,
भरो तुम दर्दी दिलों में आन्तरिक उल्लास,
शीघ्र हो निर्धूम अब आश्वस्ति का आकाश,
चेन टूटे वायरस की रुके नर-संहार।।

दूर हो यह विकट संकट हों विधायक भाव,
धैर्य साहस से भरें इस त्रासदी के घाव,
रहें सब निश्चिंत चाहे नगर हो या गांव,
मिली श्रेयस्कर शुभंकर गुरु-चरण की छांव,
शक्ति रूहानी तुम्हारी बने जग-आधार।।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में गत कल की भांति करीब १०.१० बजे से पूज्यप्रवर ने पट्ट से नीचे खड़े होकर जप प्रयोग किया। इस अवसर पर आचार्यप्रवर ने कहा--'आज वैशाख शुक्ला दशमी है। आज फिर हमें

कल की भांति 'चइत्ता भारहं वासं .....' श्लोक का खड़े-खड़े सात बार पाठ करना है। कोरोना वायरस के संदर्भ में हम विश्व शांति और संकटग्रस्त लोगों की विशेषतया चित्त समाधि-शांति के लिए आध्यात्मिक मंगलकामना के रूप में सात बार पाठ करने का यथासंभव प्रयास कर रहे हैं।' पूज्यप्रवर ने खड़े-खड़े सात बार पाठ किया।

तदुपरान्त पुनः विराजमान होकर कहा--'आज वैशाख शुक्ला दशमी है। भगवान महावीर ने आज के दिन कैवल्य प्राप्ति की थी। उन्होंने साधना का पथ स्वीकार किया। न केवल उन्होंने वर्धमान (महावीर) के जीवन में, अपितु पिछले जन्मों में भी उन्होंने साधना की थी, कठोर तपस्या की थी। जब पिछले एक जन्म में वे राजर्षि नंदन के रूप में थे, उस समय उन्होंने ग्यारह लाख से ज्यादा मासखमण कर लिए। महावीर के रूप में एक जो जन्म था, साधना थी, हम कल्पना करें उसकी पृष्ठभूमि में पिछले जन्मों की साधना भी थी। मानों कई जन्मों की तैयारी के बाद वे 'महावीर' बने। वे 'महावीर' भव में करीब तीस वर्षों तक गार्हस्थ्य में भी रहे थे। फिर वे साधु बने और करीब साढे बारह वर्षों तक विशिष्ट अध्यात्म साधना में संलग्न रहे।

उन्होंने कितनी साधना की, अनाहार की भी विशिष्ट साधना की। उसके साथ उनका आभ्यंतर तप भी चलता था। उन्होंने साधना काल में रोज तो कभी खाना खाया ही नहीं, कितनी लम्बी-लम्बी तपस्याएं कीं। साढे बारह वर्षों के साधनाकाल में पारणे के दिन तो बहुत थोड़े थे, तपस्या के दिन ज्यादा रहे। उपसर्ग आदि की स्थितियां भी आईं, किन्तु उन्हें वे स्थितियां क्या डिगा सकती थीं। वे परम वीतरागता की साधना में लगे हुए थे। मानों वे समता की प्रतिमूर्ति बन गए थे।

आज के दिन परम प्रभु महावीर ने केवलज्ञान प्राप्त किया था। केवलज्ञान प्राप्त करने का अर्थ है, जो पाना था, वह पा लिया। उसे पाना भी क्या कहें, जो भीतर आवरणयुक्त था, उसे आवरणमुक्त कर लिया। केवलज्ञान सर्वज्ञता की स्थिति है, उसे प्राप्त करने के बाद कोई ज्ञान प्राप्त करना अवशेष रहता ही नहीं। मान्यता के अनुसार वर्तमान में इस पंचम काल में इस भरत क्षेत्र से केवलज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। मैं केवलज्ञान का दूसरा अर्थ बताना चाहूंगा-'केवल' 'ज्ञान'-केवल जानो, राग-द्वेष मत करो। हम केवल ज्ञान की साधना करें, उसके साथ राग-द्वेष नहीं होना चाहिए। यह साधना जितनी की जा सके, करने का प्रयास करना चाहिए। अनुकूलता-प्रतिकूलता, सुख-दुःख,मान-अपमान जो भी स्थिति आए। उसे केवल जानना चाहिए, उसमें राग-द्वेष से मुक्त रहने का यथासंभव प्रयास करना चाहिए। मैं बी.एम.आइ.टी. बेलाटी, सोलापुर में बैठा-बैठा परम प्रभु, परम श्रद्धेय, परम वन्दनीय भगवान महावीर को उनके केवलज्ञान दिवस पर बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ अपनी श्रद्धांजलि अर्पित कर रहा हूं।

हालांकि वैशाख शुक्ला नवमी और वैशाख शुक्ल दशमी के दिन मुझे महाराष्ट्र के जालना क्षेत्र में होना था, किन्तु मैं वहां नहीं पहुंच सका, लेकिन मैं महाराष्ट्र में ही हूं।'

आज प्रवचन के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, साध्वीवर्याजी और मुख्यमुनिश्री पूज्य सन्निधि में उपस्थित थे। साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर से निवेदन किया कि--'आचार्यप्रवर अपने अनुभव सुनाएं।' पूज्यप्रवर ने उनके निवेदन को स्वीकार कर परम पूज्य गुरुदेवश्री तुलसी और परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी से संबंधित अपने जीवन के अनेक प्रसंग सुनाए।

एक दशक एकादशमाधिशास्ता का

तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण के आचार्य पदारोहण का एक दशक सम्पन्न हुआ। इन दस वर्षों में परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अनेकानेक कीर्तिमान स्थापित किए। इस अवधि में परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल नेतृत्व में अध्यात्मिक व्यक्तित्व विकास, ज्ञान विकास, राष्ट्र विकास, जन कल्याण, संघ प्रभावना आदि के अनेकानेक उपक्रम संपादित हुए। सुदूर प्रांतों में स्थित जैन धर्म से अनजाने लोग न केवल जैन धर्म व तेरापंथ से परिचित हुए, अपितु वे आचार्यप्रवर के त्याग-तपोमय, तेजस्वी, सौम्य

और सहज व्यक्तित्व के दीवाने बन गए। लोगों के मन-मस्तिष्क में आचार्यप्रवर जैन धर्म के प्रभावक आचार्य और मानवता के मसीहा के रूप में प्रतिष्ठित हो गए। यहां प्रस्तुत है एकादशमाधिशास्ता के एक दशक की उपलब्धियों की संक्षिप्त झलक-

- परम पूज्य आचार्यप्रवर के शासनकाल में अब तक १६८ साधु-साध्वी दीक्षित हो चुके हैं। आचार्यप्रवर ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष के उपलक्ष में न केवल १०० साधु-साध्वियों की दीक्षा के अपने सपने व संकल्प को साकार कर दिखाया, अपितु उस वर्ष में एक साथ ४३ दीक्षाएं प्रदान कर तेरापंथ धर्मसंघ में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। एक साथ ३३ साध्वियों की दीक्षा का कीर्तिमान भी पूज्यप्रवर के नाम स्थापित हो गया।
- परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आचार्य पदारोहण के प्रथम चतुर्मास समाप्ति के तुरन्त बाद सुदीर्घ (किलोमीटर की दृष्टि से) यात्राओं का क्रम प्रारंभ कर दिया और सन् २०१४ से तो सुदूर प्रान्तों व विदेशों की ओर भी प्रस्थित हो गए। आचार्यप्रवर की सुदीर्घ यात्रा का क्रम अब तक अनवरत चल रहा है। आचार्यप्रवर ने अपने शासनकाल में करीब २०६३० कि.मी. की पदयात्रा कर ली है। इससे पूर्व युवाचार्य अवस्था में की गई करीब १४४३३ कि.मी. की यात्रा को मिलाकर पूज्यप्रवर की दीक्षा के बाद अब तक कुल पदयात्रा लगभग ४८६३८ कि.मी. की हो गई। दस वर्ष के शासनकाल में बीस हजार से ज्यादा कि.मी. की पदयात्रा तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास का एक कीर्तिमान है।
- विदेश की धरती में पधारने वाले परम पूज्य आचार्यप्रवर तेरापंथ धर्मसंघ के प्रथम अनुशास्ता हैं। आचार्यप्रवर ने ३१ मार्च २०१५ को नेपाल की धरा को अपने चरण से पावन किया। नेपाल की करीब आठ माह की यात्रा प्रवास के पश्चात् आचार्यप्रवर का भूटान में भी पदार्पण हुआ।
- आचार्यप्रवर ने ६ नवम्बर २०१४ को भारत देश की राजधानी दिल्ली के लालकिले से अहिंसा यात्रा का प्रारंभ किया और इस यात्रा में आचार्यप्रवर ने भारत के अब तक १८ राज्यों में १४००० से ज्यादा किलोमीटर की यात्रा कर ली है। आचार्य पदारोहण के बाद अब तक भारत के २१ राज्य पूज्यचरणों से पावन हो चुके हैं। इस प्रकार २१ राज्यों का स्पर्श भी तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यों के इतिहास में कीर्तिमान है। पूर्वोत्तर और दक्षिण भारत की संलग्न रूप में यात्रा करने वाले भी पूज्यप्रवर संभवतः प्रथम जैनाचार्य हैं।
- पूज्यप्रवर अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान हिन्दुस्तान के ऐसे अनेक राज्यों में पधारे, जहां तेरापंथ के आचार्यों का पहले कभी पधारना नहीं हुआ था। दस वर्ष में आचार्यप्रवर ने एक हजार से अधिक ऐसे क्षेत्रों का स्पर्श किया, जहां तेरापंथी परिवार निवासित हैं। इनमें से सैंकड़ों क्षेत्र तेरापंथ के अनुशास्ता द्वारा प्रथम बार स्पृष्ट हुए हैं। आचार्यप्रवर के पदार्पण और प्रेरणा से उन श्रद्धालुओं की श्रद्धा और अधिक परिपुष्ट हुई।
- आचार्यप्रवर के मंगल नेतृत्व में जनकल्याण का कार्य भी सुव्यवस्थित रूप में जारी है। अहिंसा यात्रा के दौरान लाखों लोगों ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रतिज्ञाएं स्वीकार की हैं। इसके साथ पूज्यप्रवर की पावन अनुशासना में चले अभियान के अन्तर्गत एक करोड़ से अधिक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार किया। लोगों पर आचार्यप्रवर की प्रेरणा का जादू-सा प्रभाव होता दिखाई देता है। कितने लोगों ने पूज्यप्रवर से प्रेरित होकर अपनी वर्षों पुरानी नशे की लत को मानों झटके से छोड़ दिया। कितने-कितने लोगों ने तुरन्त बीड़ी के बंडलों को तोड़कर, गुटखे के पैकेटों को फेंक कर पूज्यप्रवर से नशामुक्ति की प्रतिज्ञा स्वीकार की। इस प्रकार आचार्यप्रवर महान समाज सुधारक के रूप में लोगों के दिलो-दिमाग में छाए हुए हैं।

- भूटान में पूज्यप्रवर का जुलूस के रूप में प्रवेश अपने आपमें विशिष्ट घटना थी। संभवतः यह प्रथम प्रसंग था कि भूटान के मुख्य द्वार से किसी अन्य धर्मावलम्बियों (बौद्ध के सिवाय) का भव्य जुलूस के रूप में प्रवेश हुआ हो और बौद्ध गुम्बा में भी किसी अन्य धर्माचार्य के प्रवास का भी यह प्रथम प्रसंग था। बौद्ध-लामाओं ने १०००० मंत्रों से आचार्यप्रवर का अभिनन्दन किया, वह भी एक विरल घटना थी।
- परम पूज्य आचार्यप्रवर भारत और विदेश की सेना को संबोधित करने वाले संभवतः प्रथम जैनाचार्य हैं। हिन्दुस्तान, नेपाल और बंग्लादेश इन तीन देशों के जवानों ने आचार्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के संकल्प ग्रहण किए।
- नेपाल सरकार ने अहिंसा यात्रा पर डाक टिकिट जारी कर अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर के चरणों में अपनी कृतज्ञता अर्पित की। भारत के अलावा किसी अन्य देश द्वारा डाक टिकिट जारी करना न केवल तेरापंथ धर्मसंघ, अपितु सम्पूर्ण जैन धर्म के इतिहास का संभवतः अद्वितीय प्रसंग था। नेपाल सरकार द्वारा जितने कम समय में यह कार्य किया गया, वह भी अपने आप में उल्लेखनीय है।
- अब तक हिन्दुस्तान के १६ राज्यों ने आचार्यप्रवर को राजकीय अतिथि का सम्मान अर्पित किया है। यह भी जैन शासन के इतिहास का कीर्तिमान है। पूज्यप्रवर को यह सम्मान अर्पित करने वाले राज्य इस प्रकार हैं-राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, असम, नागालैण्ड, मेघालय, आन्ध्र प्रदेश, तमिलनाडु, पुदुचेरी, कर्नाटक और केरल।
- आचार्यप्रवर के पावन नेतृत्व में जैनागमों के सम्पादन का कार्य अनवरत जारी है। एक दशक में प्रकाशित आगम एवं आगम व्याख्या साहित्य आदि इस प्रकार है-भगवई भाग-५, निसीहज्झयणं, कप्पो, दसाओ, ववहारो, आवस्सयं, विवागसुयं, रायपसेणियं, आयारचूला, जीतकल्पसभाष्य, इसिभासियाइं, आवश्यक निर्युक्ति खण्ड-२, विशेषावश्यक भाष्य भाग-१,२, निशीथ निर्युक्ति एवं भाष्य भाग-१,२,३,४, पंचकल्प भाष्य, ओघनिर्युक्ति, आयावाओ और आगम अट्ठुत्तरी। इसके अतिरिक्त पण्णवणा, भगवई खण्ड ६, ७, जीवाजीवाभिगम, अनुत्तरोपपातिकदशा, अंतगडदसाओ और निरयावलिका का सम्पादन कार्य, औपपातिक वृत्ति, आचारांग वृत्ति, समवयांग वृत्ति, विपाक वृत्ति, उत्तराध्ययन वृत्ति और स्थानांग वृत्ति का हिन्दी अनुवाद कार्य तथा समवाओ, नायाधम्मकहाओ, दसवेआलियं और नन्दी का अंग्रेजी अनुवाद कार्य जारी है।
- आचार्यप्रवर के मंगल नेतृत्व और मार्गदर्शन में तेरापंथ धर्मसंघ में दो आचार्यों के प्रायः समग्र साहित्य का संपादन हुआ। आचार्य भिक्षु वाङ्मय का कार्य पूज्यप्रवर के प्रधान सम्पादकत्व में प्रगतिमान है तो आचार्य तुलसी वाङ्मय के १०८ भाग तथा आचार्य महाप्रज्ञ वाङ्मय के १२१ भाग सुसंपादित रूप में प्रकाशित होकर लोकार्पित हो चुके हैं।
- दस वर्षों में पूज्यप्रवर की दस से अधिक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं तथा पूज्यप्रवर की विभिन्न कृतियों का दस से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।
- आचार्यप्रवर ने तेरापंथ धर्मसंघ के श्रावक-श्राविकाओं के लिए शनिवार की सामायिक का अवदान दिया। आज प्रत्येक शनिवार सायं ७ से ८ बजे के बीच सामायिक हजारों-हजारों लोगों के जीवन का मानों अंग बन गई है। इसके साथ पूज्यप्रवर ने 'सुमंगल साधना' के रूप में श्रावक-श्राविकाओं के लिए सघन साधना का क्रम शुरु किया। कितने ही लोग इसे स्वीकार कर अपने जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से उन्नत बना चुके हैं। हजारों लोगों ने बारहव्रतों को स्वीकार कर अपने श्रावकत्व को ओर अधिक पुष्ट बनाया है।
- पूज्यप्रवर की सन्निधि में तपस्या के भी नए-नए कीर्तिमान बनते जा रहे हैं। तेरापंथ धर्मसंघ में एक चतुर्मास में सर्वाधिक ६३ मासखमण, एक साथ सर्वाधिक ४९७ वर्षीतप के पारणे, सबसे छोटी उम्र में मासखमण एवं ४२ दिनों की तपस्या आदि अनेकानेक कीर्तिमान पूज्यसन्निधि के नाम दर्ज हैं।

- आचार्यप्रवर के पावन नेतृत्व में ज्ञानाराधना के अनेकानेक उपक्रम संचालित हैं। पूज्यप्रवर ने चारित्रात्माओं के सघन अध्ययन हेतु महाप्रज्ञ श्रुताराधना पाठ्यक्रम का अवदान दिया। कई चारित्रात्माएं इसके माध्यम से श्रुत सागर की गहराई में अवगाहन कर रहे हैं। २८ व्यक्ति जैन दर्शन का गहन अध्ययन कर जैन स्कॉलर बने। ४५६ लोग तत्त्वज्ञान प्रचेता और १०७ व्यक्ति तेरापंथ दर्शन प्रचेता के रूप में उभरकर सामने आए। जैनागमों का स्वाध्याय सैंकड़ों लोगों के जीवन का अंग बन गया। हजारों नए व्यक्ति जैन विद्या पाठ्यक्रम से जुड़े हैं।
- ज्ञानशाला का उपक्रम भी पूज्यप्रवर के मंगल नेतृत्व में क्रमशः प्रगतिमान है। एक दशक में ज्ञानशालाओं की संख्या ३४० से ५४०, ज्ञानार्थियों की संख्या १३१७२ से १८८५० और प्रशिक्षकों की संख्या १६०३ से ४०४५ हो गई।
- उपासक श्रेणी ने भी एक दशक में पूज्यप्रवर के पावन नेतृत्व में अच्छी प्रगति की। दस वर्षों में उपासकों की संख्या १३२ से बढकर ५७५ हो गई तथा पर्युषण में धर्माराधना हेतु जहां सन् २०१० में ७३ क्षेत्रों में उपासक वर्ग गए थे, वहीं सन् २०१६ में २३२ क्षेत्रों में उपासक वर्ग भेजे गए।
- मुख्यमुनि और साध्वीवर्या पद भी पूज्यप्रवर के शासनकाल के अनुत्तर अवदान हैं। आचार्यप्रवर इन दोनों पदों का सृजन कर दो व्यक्तित्वों को मनोनीत करते हुए न केवल निश्चिन्तता का अनुभव किया, अपितु तेरापंथ धर्मसंघ की निश्चिन्तता का पथ भी प्रशस्त किया। आचार्यप्रवर अपनी दोनों कृतियों के विकास के लिए इन्हें निरन्तर प्रशिक्षण भी प्रदान कर रहे हैं।
- एक दशक में आचार्यप्रवर की निस्पृहता भी अनेक बार उभरकर सामने आई। आचार्यप्रवर ने अनेक धर्म गुरुओं और कई संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत 'अंलकरण', 'सम्मान' आदि को ससम्मान अस्वीकार कर दिया।
- सांवत्सरिक एकता की दिशा में अनूठी पहल करते हुए आचार्यप्रवर ने सम्पूर्ण जैन समाज के चिरपालित सपने को साकार करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम उठाकर जैन शासन के समक्ष एक मिशाल स्थापित कर दी।
- आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष, आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष और आचार्य महाश्रमण अमृत महोत्सव वर्ष इस एक दशक का सुनहरा इतिहास है। इन अवसरों पर सैंकड़ों आध्यात्मिक-सामाजिक उपक्रम संपादित हुए, जो तेरापंथ धर्मसंघ की प्रभावना व विकास की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहे। इन प्रसंगों पर भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारों द्वारा भी अनेक रूपों में अपनी रचनात्मक विनयांजलि अर्पित की गई।
- नेपाल के राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, भारत के अनेक राज्यों के राज्यपाल, कई केन्द्रीय मंत्री आदि कई गणमान्य व्यक्ति अहिंसा यात्रा में पैदल चलकर संभागी बने। कितन-कितने विशिष्ट व्यक्तियों ने अहिंसा यात्रा की प्रतिज्ञाएं भी स्वीकार कीं।

इस प्रकार परमपूज्य आचार्यप्रवर के शासनकाल का एक दशक अत्यधिक उपलब्धियों भरा रहा । तेरापंथ ार्मसंघ की संगठनमूलक संस्थाएं भी पूज्यप्रवर के मंगल नेतृत्व में संगठन और गतिविधियों की दृष्टि से निरन्तर प्रगतिमान हैं। उनके द्वारा समाज सेवा का कार्य भी सघन रूप में गतिमान है। सामाजिक दृष्टि से अनेक कीर्तिमान भी रचे गए।

ऐसी न जाने कितनी-कितनी उपलब्धियां दिलों-दिमाग में उभर रही हैं, किन्तु समय व विज्ञप्ति के पृष्ठों की सीमा उनके लेखन में कुछ बाधक बन रही है। बस एक ही स्वर मस्तिष्क में गूंज रहा है-'हरि अनंत, हरि कथा अनंता'।

●●●

क्रमशः ...

परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण हैदराबाद में

१ सितम्बर। आज दोपहर में परम पूज्य आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में समीक्षा परिषद की संगोष्ठी समायोजित हुई। प्रत्येक माह की १, २ व ३ तारीख को आयोजित होने वाली यह संगोष्ठी इस बार करीब छह माह बाद आयोजित हुई। पूज्यप्रवर ने आज की संगोष्ठी के दौरान समीक्षा परिषद की आगामी संगोष्ठियां स्थगित कर दीं और २ जनवरी २०२१ को यथासंभव इस संगोष्ठी के आयोजन का निर्णय किया।

परम पूज्य कालूगणी का आचार्य पदारोहण दिवस

२ सितम्बर। भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा। तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टम अनुशास्ता परम पूज्य कालूगणी का आचार्य पदारोहण दिवस। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज चतुर्मास के लगभग दो महीने सम्पन्न हो रहे हैं। आज भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा है। चतुर्मास में श्रावण और भाद्रव माह का अधिक महत्त्व होता है। श्रावण और भाद्रव में भी भाद्रव मास का अधिक महत्त्व है। तपस्या की आराधना, पर्युषण, दसलक्षण पर्व और हमारे धर्मसंघ के आचार्यों से जुड़े कई ऐतिहासिक दिवसों व विकास महोत्सव के संदर्भ में भाद्रव मास का अधिक महत्त्व है। आज का दिन अर्थात् भाद्रव शुक्ला पूर्णिमा का दिन परम पूज्य कालूगणी से जुड़ा हुआ दिन है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के अष्टमाचार्य परम पूज्य कालूगणी थे। उन्होंने आज के दिन विधिवत औपचारिकतया जैन श्वेताम्बर तेरापंथ के आचार्य पद का दायित्व संभाला था। वे परम पूज्य डालगणी के उत्तराधिकारी थे। वे जब जन्मे, तब भी कुछ विशिष्ट बात थी। (पूज्यप्रवर ने कालूगणी के जन्म से संबंधित प्रसंग सुनाया।)

कालूगणी परम पूज्य मघवागणी के पास दीक्षित हुए और उन्हें करीब पांच वर्षों तक परम पूज्य मघवागणी का साया मिला। उनमें संस्कृत भाषा के अध्ययन की भावना, निष्ठा जगी। मघवागणी फरमाते थे--'आगमों की कुंजी संस्कृत भाषा है।' आगमों की टीकाएं संस्कृत में हैं। संस्कृत का ज्ञान होने से आगमों का मर्म जल्दी समझ में आ सकता है, ऐसा मेरा मानना है। प्राकृत और संस्कृत भाषा में परस्पर संबंध है। कालूगणी ने स्वयं संस्कृत भाषा का अध्ययन किया और धर्मसंघ में इसके विकास में उन्होंने अपनी शक्ति व श्रम का कितना नियोजन किया। उनके द्वारा दीक्षित कितने संत संस्कृत के विद्वान बन गए। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी, जो परम पूज्य कालूगणी के सुशिष्य थे, उनका संस्कृत भाषा में गहरा अध्ययन था। वे संस्कृत भाषा में रचना भी कर लेते थे, अध्यापन भी कर लेते थे। परम पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी भी कालूगणी के सुशिष्य थे। उनका भी संस्कृत में कितना विकास था। वे संस्कृत भाषा में आशु कविता कर लेते थे, उन्हें व्याकरण का भी कितना ज्ञान था। मुनिश्री नथमलजी स्वामी (बागौर), मुनिश्री बुद्धमलजी स्वामी का भी संस्कृत भाषा में कितना विकास था। इस प्रकार कालूगणी द्वारा दीक्षित साधुओं में भी संस्कृत भाषा का कितना विकास था। (पूज्यप्रवर ने महामना कालूगणी के जीवन से संबंधित कई प्रसंग फरमाए। इस दौरान यदा-कदा पूज्यप्रवर द्वारा किया जाने वाला संगान सोश्यल मीडिया के माध्यम से जुड़े हुए दर्शकों और श्रोताओं को अभिभूत बना रहा था।) परम पूज्य कालूगणी के आचार्य पदारोहण दिवस के उपलक्ष में उनके प्रति अपनी श्रद्धाभावना अर्पित करता हूं।'

पाक्षिक संबोध

३ सितम्बर। आज सूर्योदय के पश्चात साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वन्दन कर पाक्षिक खमतखामणा किए। तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने साध्वियों से सुखपृच्छा करते हुए 'अल्पस्य हेतोर्बहुरातुमिच्छन्, विचारमूढः प्रतिभासि मे त्वम्'-संस्कृत के इस श्लोकांश के आधार पर प्रेरणा प्रदान करते

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

हुए कहा--'थोड़े लाभ के लिए ज्यादा नुकसान नहीं उठाना चाहिए। जैसे-भौतिक सुखों के लिए साधु साधुत्व को छोड़कर गार्हस्थ्य में चला जाए। अगले जन्मों में चक्रवर्ती आदि बनने का निदान कर ले। प्रातःकाल आगमों को छोड़कर अखबार पत्र-पत्रिका आदि को पढने में समय लगाए।' इस प्रकार आचार्यप्रवर ने इस पद्यांश के आधार पर काफी समय तक प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर का यह पावन पाथेय न केवल साध्वियों के लिए अपितु मुनिवृन्द, समणश्रेणी और श्रावक-श्राविकाओं के लिए भी दिशादर्शक था।

आज से पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल 'कल्पतरु' के महाश्रमण सभागार में सायं करीब ५ से ६.१५ बजे के बीच बहनों की सामायिक का क्रम शुरू हो गया। गत मार्च माह से पूज्यप्रवर की प्रवास स्थल की बिल्डिंग में बहनों की सामायिक निषिद्ध थी। ज्ञातव्य है कि पुरुष वर्ग की सामायिक का क्रम १९ अगस्त पश्चिम रात्रि में (प्रातः) प्रातः ४.१५ से ५.३० तक के लिए शुरू हो गया था। उसके बाद उनके लिए रात्रि ८ से ९.३० का भी क्रम शुरू हुआ।

पुनः प्रारंभ हुआ तत्त्वार्थ भाष्यानुसारिणी का वाचनक्रम

४ सितम्बर। आज से परमाराध्य आचार्यप्रवर द्वारा तत्त्वार्थ भाष्यानुसारिणी का वाचनक्रम पुनः प्रारंभ हुआ। ज्ञातव्य है कि सन् २०१५ के विराटनगर चतुर्मास से प्रारंभ हुआ यह क्रम २० मार्च २०२० से बंद था। इस उपक्रम के अन्तर्गत पूज्यप्रवर द्वारा संस्कृत भाषा में लिखित जैन धर्म के इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ की वाचना प्रदान की जाती है। इस दौरान साध्वीप्रमुखाजी, मुख्यनियोजिकाजी, साध्वीवर्या, मुख्यमुनिश्री आदि अनेकानेक साधु-साध्वियों की उपस्थिति रहती है।

५ सितम्बर। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान आगमाधारित प्रवचन के दौरान प्रसंगवश कहा--'आज ५ सितम्बर है। शिक्षक दिवस है। विद्यार्थियों को पुस्तकीय ज्ञान देना शिक्षक का कर्तव्य होता है। उसके साथ अच्छे संस्कार भरने का प्रयास भी शिक्षक को करना चाहिए। वह यह सोचे कि मेरे विद्यार्थी केवल ज्ञान की दृष्टि से ही नहीं, आचार और संस्कार की दृष्टि से भी योग्य बनें। विद्यार्थियों में संयम के संस्कार हों, उनका जीवन नशामुक्त हो, जीवन में अहिंसा, मैत्री और ईमानदारी रहें, ऐसे संस्कार विद्यार्थियों में पुष्ट बनें, इस दृष्टि से शिक्षक जागरूक और प्रयासरत रहें। शिक्षक ज्ञानदाता होता है, वह ऐसा ज्ञान दे कि विद्यार्थी सत्संस्कारी बन जाए।'

आज रात्रि में पूज्यप्रवर ने संतों को वर्तमान संदर्भ में किसी के स्वास्थ्य में कठिनाई होने की स्थिति में की जाने वाली 'आरोग्य केन्द्र' आदि व्यवस्थाओं की स्मारणा करवाई। पूज्यप्रवर ने गत जुलाई माह में ही ये व्यवस्थाएं 'विसम्बन्ध-३' के अन्तर्गत प्रदान कर दी थीं। इन व्यवस्थाओं को 'स्मृतियां लोकडाउन की' शृंखला में आगामी अंकों में प्रकाशित किया जा सकेगा।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक-संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी., ६३, जी.एफ., पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला